संस्कृत

प्रयोग - स्मार्त

क्र. नं. १०८

पुनःसंधानप्रयोग

"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

३७४

(1)

॥श्रीगणेशायनमः॥ आचम्यप्राणानायम्य॥ देशकालौसंकीर्त्य॥

॥अथपुनःसंधानप्रयोगः॥ श्रीमन्महागणाधिपतये॥ इष्टदे० कुल० स्थान० ग्राम० वास्तु० शचीपुरंदरा० उमा
महेश्वराभ्यां० मातापितृभ्यां० सर्वेभ्योदेवेभ्योनमः० सर्वेभ्योब्राह्मणेभ्योनमोनमः एतत्कर्मप्रधानदेवता
भ्योनमोनमः॥ अविघ्नमस्तु॥ हरिःॐ॥ सुमुखश्चेत्यादि कलशा समर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं ममप्र
मादादेतावत्कालपर्यंतं गृह्याग्निविच्छेदजनितदोषप्रत्यवायपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रत्यब्दमे
केकप्राजापत्यात्मकप्रायश्चित्तं रजततन्निष्क्रयपादप्राय[illegible]येनअहमाचरिष्ये॥ तथाच उत्सन्नानांसायं
प्रातर्होमाणांदर्शपौर्णमासस्थालीपाकानांच[illegible]लोपप्रायश्चित्तंनिष्क्रयद्रव्यं ब्राह्मणायदातुमहमुत्सृज्ये
तेनश्रीकर्मांगदेवताःस्वरूपीपरमेश्वरप्रीयतां नमम॥ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु॥ ॥ फल[illegible]सिद्ध्यर्थं ममाविघ्ने
न स्वगृह्याग्नेःपुनःसंधानाख्यंकर्मकरिष्ये॥ तत्रादौनिर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं महागणपतिपूजनं स्वस्ति
पुण्याहवाचनं स्वस्त्युदिनादिसकलं कर्मकरिष्ये॥ ॐ भू॥ गणा० नां० त्वा० सादनं॥ अस्मिन्पूगीफले
ऋद्धिबुद्धिसहितंमहागणपतिं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि॥ महागणपतये न
मः ध्यानादिभिः त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि॥ नमस्करोमि॥ अनेनकृतपूजनेन तेनश्रीमहागणपतिः प्रीय
तांनमम॥ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु॥ मत्संकल्पकुंडबने महाजनान्नमस्कृत्य आशीर्वचनम्प्रे

॥श्री॥ [illegible] पुनःसंधान [illegible] ॥ [illegible]

मांगल्य अद्य करिष्यमाण उनः संधानाख्यस्य कर्मणः पुण्याहं भवंतो ब्रुवंतु ॥ अस्तु पुण्याहं॥
मस्तुं सकुटुंबिने ॰ अद्य क॰ पुनः सं॰ नाख्याय कर्मणे स्वस्त्ययनं भवंतु ॥ ॐ भु अस्तु स्वस्त्ययनं॥
मस्तु सं॰ य अद्य करि॰ पुनः सं॰ कर्मण ऋद्धि भवंतो ब्रुवंतु ॥ कर्म ऋध्यतां ऋद्धिः समृद्धिः॥
पुण्याहवाचनफल सं॰ ब्रुवंतु ॥ पुण्याह वा॰ रस्तु ॥ उत्तरे कर्मण्य विघ्नमस्तु ॥ ॥ ॥
स्तु इ तु गोमयेन प्रदक्षिण उपलिप्य ॥ तत्सं॰ बोदयात् ॥ उद्धन्यमानमस्या अमेध्यं॥
अपपाप्मानं यजमानस्य हंत ॥ शिवा नः संतु प्रदिशः श्वतस्रः ॥ शन्नो माता पृथिवी तोक साता ॥ तिस्रः
नः ॥ श कलमाग्नेयानि रस्य अप उपस्पृश्य ॥ ॰ ॰ शंयो रभिस्रवंतु
माय॰ ईशा॰ मध्ये अग्निस्थानायनमः ॥ वे ध्यानुरस्य रूप पृथिव्यां परि स्तृण तो स्थान मावे ॥१॥
ॐ चत्वारि शृंगा॰ श॰ सप्तहस्तः ॰ ॥ विश्व यन्न आत्मा॰ शन्नः ॥ अग्ने वे
वैश्वानरशांडिल्यगोत्र मेष ॰ ॰ ॰ ससमुखे वीरदो भव ॥ क्रियमाणे
पुनःसंधानहोमे देवतापरिग्रहार्थं मन्वा ॰ ॰ ॰ सामित्र समादाय अद्य इहास्यादि ॥
प्राणायामांतं कृत्वा ॥ या पुरस्तो॰ भे ॰ ॰ ॰ पुनः संधान होम कर्मणि यायक्ष्यमाण देवताः ताः सर्वाः परिग्रहा
ष्यामि ॥ जातवेदसमग्निमध्मेन आधारौ ॰ ॰ प्रजापतिम ॰ ॰ चाज्येन आज्यभागहोमे अग्निसोम वाज्येन सामान्य
प्रधानहोमे अग्नि जातवेदसं ॰ सं ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ आज्याहुतीनाम अग्निवायुसूर्य प्रजापतिं प्रत्येकमा
ज्येन वैशेषिक प्रधानहोमे मिंदवंतमग्निं द्विरा ज्येन ॰ ॰ ॰ ॰ अभ्यावर्तिनमग्निं चतुराज्येन अग्निवायुसूर्य प्रजापति
प्रत्येकमाज्येन अयासमग्निं मनोज्योतिः प्रजापतिं स ॰ ॰ तमग्निं ॰ ॰ ॰ वास्तुस्पतिं वाज्येन अंगहोमे वरुणं द्विः अग्नीवरुणौ
द्विः अयासमग्निं प्रजापतिं वाज्येन जयदेवताः अभ्यातानदेवताः राष्ट्रभृद्देवताः प्रतिदैवतं प्रतिमन्त्र ए॰ कै॰ कयान्याज्य
स्थायक्ष्ये स्विष्टकृद्धोमे अग्निं स्विष्टकृतं हुतशेषेण त्रिर्देहं होमे अग्निं त्रिर्देहेन सोमं त्रि॰ अग्निमन्नादं त्रि॰ अग्निस
प्तपतिं त्रि॰ प्रजापतिं त्रि॰ विश्वान्देवान् त्रि॰ सर्वा देवता त्रिः॰ अग्निं स्विष्टकृतं त्रि॰ पशुपतिं बलीकरणे प्रायश्चित्त देवताज्येन
संस्रावहोमे वसुरुद्रानादित्यान् संस्रावेणाज्येन प्रधानदेवताः सद्यो यक्ष्ये भूर्भुवः स्वः स्वाहा प्रजापतये अन्वाधाय ॥ एवमेव
स॰ यथा॰ आयुः परि पु॰ द॰ प॰ उ॰ दक्षिणतः ब्रह्मणे उत्तरतः प्रणीताय ॰ ॰ ॰ ॥ ॰ ॰ ॥ प्रथि॰ ता॰ यो॰ श॰ तमो
त पात्राण्यासा॰ दर्वी आज्य॰ प्रणी॰ प्रोक्ष॰ स्रुवं ब॰ उ॰ सं भव र त्रिर॰ आज्यम॰ ॥ समाकृत्वा अन्ये॰ अद्भि॰ प्रणीताप॰ त्रिः प्र॰
प्रागग्र॰ पित्वा उद॰ त्रि॰ उत्तरे॰ दर्भे॰ अन्येद॰ ति॰ तिर॰ प॰ प्रो॰ स्य॰ य॰ पापु॰ बिल्वं द्रुपम चवि विषा॰ त्रिः स॰ प्रो॰ नेपवि आस्यपात्रे दर्भाणि
संन्नदर्भाग्राणां अग्रैः अंतरतो कार प्रनावामध्ये बीत्ता पुनर्ति अनयो॰ संप्रोक्ष्य अपां॰ ति॰ आज्यंवि पवित्राप्य उपवे॰ पु
ते ष॰ अव॰ दर्भंत॰ त्रिः प॰ उ॰ ॰ क॰ अप॰ उपवे॰ ता॰ उप॰ अप॰ स्य॰ अप॰ ॰ ॰ तेध्माज्य॰ पवि॰ उद॰ ग॰ पुन॰ य॰ पवि॰ ध्म अन्वाधाय शम्या॰ अ॰ प

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(3)

अपरेण्या॰ मु॰ मं॰ ष्टोमध्य॰ उत्तरेणा॰ नां अपरेण्यामग्निः॰ अथ परिषिंच॰ अदि॰ स॰ अनु॰ स्व॰ सर॰ स्व॰ देव॰ प्रसव॰ इध्ममिं इ॰ स्वाधाद्धाम
अयतर॰ यस्त्वा जात वेदसे अथ दर्व्यां॰ उत्तरपरिधिसंधिमन्ववहृत्य ॐ प्रजा॰ म॰ स्वा॰ प्रजा॰ दक्षिणपरिधिसंधिमन्ववहृत्य इन्द्रः॰ अग्न॰
सोमः॰ उत्को॰ स्वाहा जात॰ याति॰ इति। तं॰ स्वा॰ सं॰ रा॰ सं॰ रा॰ स्वा॰ सं॰ रा॰ प्रसा॰ प्रसा॰ भः॰ स्वा॰ अग्न॰ भुवः॰ वाय॰ स्वः॰ सूर्याये॰ द॰ भू॰
र्भुवः स्वः स्वा॰ प्रजाप॰ प्रधान होमः॰ य॰ म॰ र्भिः स्वाहा मि॰ द॰ पुनर॰ स्वा॰ तंतुं॰ स्वाहा तंतुं॰ उद्बु॰ ते॰ त्र्यम्बि॰ तंतु॰ अग्नेभ्यो॰ नस्त्वा॰
अभ्या॰ पुनरू॰ तः॰ स्वा॰ अभ्या॰ सहर॰ रि॰ स्वा॰ अभ्या॰ भूः भुवः स्वः भूर्भुवः स्वः॰ प्रजा॰ अया॰ ज॰ अय॰ मनोज्यो॰ धार॰ मन से॰ प्रजापते॰ स्वाहा।
प्रजा॰ चित्तिः स्कृ॰ कृ॰ नम्णं धा स्वाहा वानस्पतेभ्य॰ ॐ महोमः॰ इमं मे॰ के॰ वरु॰ तत्वा॰ यी॰ स्वा॰ वरु॰ त्वं नो [illegible] स्वाहा अग्नी॰ स त्वं नो॰ अग्नी॰
त्वन्ने॰ अय॰ प्रजा॰ प्रजा॰ चित्तं॰ चित्तिः आकूतं॰ आकू॰ विज्ञा॰ विज्ञानं॰ मनश्च॰ शक्क॰ दर्श॰ पूर्ण॰ बृह॰ र॰ यु॰ प्रजापति॰ वः स्वाहा प्र॰
अग्निर्भूतानामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मन् अस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मन्नस्यां देवहूत्यां स्वाहा अग्नये भू॰
तानामधिपतय इदं न मम॥ इंद्रो॰ इंद्राय॰ यमः॰ पृ॰ यमाय॰ वायुरं॰ वायवे॰ सूर्यो॰ दि॰ सूर्याय॰ चंद्रमा॰ चंद्रमसे॰ बृहस्प॰ बृहस्प॰
मित्रः सत्या॰ मित्रा॰ वरुणो॰ वरुणा॰ समुद्रः॰ समुद्रा॰ अन्न॰ तां॰ अन्नाय॰ सोम॰ ॐ षधी॰ सोमाय॰ सविता॰ सवित्रे॰ रुद्रः॰ प॰ रुद्राय॰
इंद्र॰ ब्रह्मसूत्रपात॰ स्मैस्वाहा अघ॰ ये॰ गंध॰ [illegible] र॰ त्वं॰ इदं न मम [illegible] मरुतो॰ मरुद्भ्यो॰ मरुः॰ प्राची॰ पितरः॰ पितृ॰ यज्ञो॰ अप॰ ॐ॰ ताषा इतधामाग्नि पर्वः॰ स॰
सृषुम्नः॰ स्व॰ तस्मै॰ चंद्र॰ तस्य न॰ ताइ॰ ताभ्यः॰ नक्ष॰ [illegible] स॰ तस्मै॰ यज्ञ॰ तस्य द॰ क्षि॰ ता॰ दक्षि॰ प्रजा॰ प॰ तस्मै॰ मन॰ तस्य॰ ऋक्॥ २॥
ताभ्यः॰ ऋ॰ कृ॰ इषि॰ तस्मै॰ वाता॰ तस्या पो॰ अ॰ ताः॰ अ॰ ग्नो॰ [illegible] स॰ नो॰ भुवन॰ पर॰ मे॰ [illegible] तस्मै॰ प्रस॰ भि॰ तस्य वि॰ ता॰ विश्वकर्मा॰ [illegible]
तस्मै॰ पूर्ज॰ तस्यावि॰ ताभ्यः॰ विद्यु॰ दूरे हे॰ तस्मै॰ अम॰ तस्य प्र॰ ता॰ [illegible] तस्मै स्वाहा ऋ॰ भाय॰ तस्या धू॰ ता रः॰ ता॰ आधि॰ क्षितिः॰ स्कृ॰
व॰ उत्॰ अ॰ पु॰ स्वाहा सनोभु॰ स्विष्टकृद्धोमः यदस्य क॰ अग्नि॰ अ॰ [illegible] स्वाहा अ॰ म॰ स्वि॰ इदं॰ प्रहरण॰ रुद्राय॰ परिध्य जनन म॰ सनो भु॰
अत्र परि॰ यथाहि॰ आयु॰ पारस्त्॰ [illegible] व॰ कूल॰ यद॰ [illegible] आयाति॰ [illegible] यानि॰ अ॰ अ॰ द॰ मधा॰ मू॰ आ॰ अ॰ द॰ मू॰ म॰ आ॰ अ॰ [illegible]
ध्यम द॰ उ॰ परि॰ अपति॰ तन्नहो॰ ॐ द॰ ति॰ अग्न॰ अ॰ सो॰ सो॰ अग्न॰ ना॰ अग्न [illegible] प्रजा॰ [illegible] अ॰ स्वि॰ अ॰ स्वि॰ उ॰ मा॰ द॰ वात्स॰ वात्स॰ बलिप॰ त्रिपुं॰ स्व॰ अ॰ कर्मे॰ अ॰

(3)
(3A)

[illegible] आत॰ [illegible] सर्पः इतदत्तदेतन्नप्राणदक्षः तृषि॰ [illegible] अप॰ प॰ [illegible] हरति सिध्य॰ कृ॰ ति। सहतरोमिहेति अग्निम॰ स्वर।
क्षर॰ पं॰ अननस्ता॰ मा॰ हो॰ अनो॰ स्वाहा अग्न॰ पुरु॰ सं॰ त॰ [illegible] न॰ अ॰ यसा॰ हा अग्न॰ त्वं नो॰ स्वाहा अग्नी॰ स त्वं॰ नो॰ अ॰ व॰
री॰ स्कृ॰ उ॰ स्वा॰ अग्नी॰ यत्र इ॰ जहि स्वाहा इदं॰ स्वास्ति॰ [illegible] पु॰ स॰ अ॰ [illegible] इदं॰ त्र्यंबकं॰ स्वाहा त्र्यंब॰ इदं विष्णु॰ विष्णव॰ महः॰ स्वा॰
अग्न॰ भुवः॰ वायव॰ स्वः॰ सूर्यो॰ महः॰ बृह॰ जनः॰ स्वाहा॰ [illegible] नमः॰ [illegible] सूर्य॰ विश्वे॰ अग्निम॰ क॰ मा॰ क्षि॰ के॰ कौ॰ नरव॰ पि॰ सुपर्ण
र्णं हु॰ मि॰ होष्या॰ यन्म॰ आ॰ मि॰ णि॰ मिंद॰ पते॰ पुन॰ तिः॰ पु॰ स्वो॰ स्वाहा मि॰ सागा॰ स व॰ कृ॰ ॐ भूर्भुवः स्व॰ प्रजा॰ वस्तभ्यो॰ ल॰ आ॰
ः॰ भागे॰ बर्हिषि॰ ये ते सदे॰ स॰ से॰ पू॰ पूर्णा॰ आशि॰ छा॰ प्राची॰ दे॰ कृ॰ दक्षि॰ दिरि॰ प्रि॰ प्रती॰ गृ॰ पु॰ उदी॰ अ॰ ष॰ ऊ॰ ध्वा॰ यज्ञः॰ स॰ यज्ञ॰ ता॥ सरु
द्वः॰ भ॰ त। अ॰ यः। यदं॰ पु। नेन॰ ति॰ कुर्वं॰ छे। बर्हिषि पू॰ तेभ्रं॰ द॰ दा॰ ज्ये। ब्रह्मा दे॰ ब्रह्मा॰ मि। परि॰ न्युं॰ ते अदितेऽनुमन्यस्वा॰ अनु॰
त्वा॰ सर॰ स्वा॰ देव॰ प्रा॰ वी॰। यज्ञ॰ न॰ यज्ञ। नमो॰ य॰ शिवे॰ स्व। स्योने॰ स्व। कृ॰ भू॰ स्व। ब्रह्मवृ॰ स्व। प्रयुक्तस्य॰ स्व। उपपतये स्वनमः। उपते
नमः उपतेनमः। सर्वभि॰ ति॰ मेधा॰ लेज॰ वर्च॰ ब्रह्म॰ आयु॰ स्व॰ श्र॰ मे॰ य॰ म॰ वि॰ वु॰ श्रि॰ ब॰ आ॰ ते॰ आरोग्य। देहि॰ नः अग्नये॰ स॰ पु॰ गं॰ अ॰
पु॰ मि। विभ्रात्ति धृ॰ वा। मानस्तो॰ ते। त्र्यायु॰ ज॰ क॰ या॰ यदे॰ त्र्या॰ तन्मे अस्तु॰ प्रमादा॰ प्र॰ च्य॰ यत्र। स्मर॰ संपू॰ र्णः विष्णवे नमः॥ ३॥
अनेन यथा सानेन यथामीलितोपद्रव्यैः कृतेन पुनः संधानरूपेण नारव्येन कर्मणा तेन श्री अग्निरूप परमेश्वरः प्रीयतां न मम
म। तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु॥ विष्णवे नमः ३। इति पुनः संधान प्रयोगः॥ पुनः सं॰ भू॰ न॰ आग्नेयस्थाली॰ सि॰ आग्ने॰ स्थालेप
नाकुति हो॰ ष्य॥ चतुष्क हीतं गृहीत्वा॥ ॐ अग्नये स्वाहा। अग्न॰ सा॰ सि॰ स॰ ष्ट॰ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा प्रजा॰ तूष्णीं समिध॰ न॰
णी दुग्ध्या कुशि॰ जु॰ कु॰ या॰ त्र॥ पुनः कर्म॥ पूर्वं ब्राह्मणान् भोजयिष्ये॰ ते॰ भू॰ द॰ दा॰ ज्ये। कृ॰ परमी॰ न मम॥ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु
कृ॰ पुनः सं॰ भूत ब्राह्मणान्द॰ ष्ये। नमो॰ हिरं॰ मे। यथा १ ॥ अस्तु॰ १ ॥ ब्रा॰ द॰ तु॰ दे॰ कर्मांगदेवताः स्वरूपी परमेश्वरः प्रीयतां न मम॥

(3A)

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com